

2006 में संशोधित बाल न्याय  
(बच्चों की देखभाल एवं रक्षा)  
अधिनियम 2000 के तहत दत्तकग्रहण

(वकीलों, दत्तकग्रहण संसाधनो और दत्तक माता पिता  
की जानकारी के लिये)



केंद्रीय दत्तकग्रहण संसाधन प्राधिकरण  
महिला और बाल विकास मंत्रालय  
भारत सरकार

## पृष्ठभूमि

अपने संवैधानिक आदेश के अनुसरण में, भारत सरकार ने बच्चों के कल्याण की एक राष्ट्रीय नीति (1974) का विकास किया है। इस नीति के मुख्य विषय को निम्नांकित शब्दों में संक्षेप में व्यक्त किया जा सकता है।

“राष्ट्र के बच्चे अत्यधिक महत्वपूर्ण संपत्ति हैं। उनका पालन-पोषण एवं उनकी चिन्ता करना हमारा उत्तरदायित्व है। मानव संसाधन के विकास की हमारी योजनाओं में बच्चों के कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनेंगे, ताकि हमारे बच्चे बड़े होकर गौरवशाली नागरिक बनें, शारीरिक रूप से चुस्त, मानसिक रूप से सचेत एवं नैतिक रूप से स्वस्थ हों, समाज के द्वारा आवश्यक कौशल एवं प्रेरणा से संपन्न हों। विकास की अवधि में सभी बच्चों के लिए विकास के समान अवसर हमारा लक्ष्य होना चाहिए, क्योंकि यह असमानता को कम करने एवं सामाजिक न्याय को सुनिश्चित करने में हमारे वृहद उद्देश्य को पूरा करेगा”।

भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने एल.के.पाण्डेय बनाम भारत संघ का मामला (डब्ल्यू.पी.सं. 1982 के 1171 एवं परवर्ती फैसलों), संयुक्त राष्ट्र संघ के साधारण सभा के द्वारा 1989 में अपनाये गये “संयुक्त राष्ट्र संघ के बच्चों के अधिकार संबंधी घोषणा पत्र” और साथ ही “1993 के अंतर-देशीय दत्तक ग्रहण संबंध में हेग समझौता” (दोनों भारत सरकार के द्वारा मंजूर) स्पष्ट रूप से यह निर्धारित करता है कि बिना परिवार के बच्चे का सर्वोत्तम हित इसके अपने सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश परिवार के साथ स्थापित होने वाले अवसर प्रदान कर पूरा किया जा सकता है। इस प्रकार हर बच्चे का देश के भीतर अपनी राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले परिवार के साथ स्थापन के लिये विचार किये जाने का अधिकार है। इस प्रकार, अंतर-देशीय दत्तक ग्रहण को एक विकल्प के रूप में देखा जाना चाहिए, जिस पर तभी विचार किया जा सकता है जब उपयुक्त विकास संभव नहीं है। यह भारत सरकार द्वारा समय-समय पर अनाथ, लावारिस और परित्याग किये गये बच्चों के दत्तक ग्रहण से संबंधित अधिसूचित दिशानिर्देशों में निर्धारित है।

केन्द्रीय दत्तक ग्रहण संसाधन प्राधिकरण (CARA) महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के अन्तर्गत दत्तक ग्रहण से संबंधित सभी मामलों के लिये राष्ट्रीय स्तर का केन्द्रीय निकाय है।

भारत सरकार अनाथ, छोड़ दिये गये और परित्याग किये गये बच्चों के पुनर्वास के लिये सर्वोत्तम गैर-संस्थागत सहायता समझी जाती है। संस्थागत देखभाल ऐसे बच्चों के लिये पुनर्वास संबंधी अंतिम प्राथमिकता है। दत्तक ग्रहण निस्संदेह रूप से किसी अनाथ, लावारिस और परित्याग किये गये बच्चे के लिये परिवार के माहौल में देखभाल एवं सुरक्षा का एक महत्वपूर्ण रास्ता उपलब्ध कराता है और खुशी, प्रेम तथा उसकी प्रतिभाओं एवं क्षमताओं की प्राप्ति की समझ के लिये एक वातावरण प्रदान करता है।



CARA

## 2006 में संशोधित बाल न्याय (बच्चों की देखभाल एवं रक्षा) अधिनियम 2000 की धारा की 2 (aa)

“दत्तकग्रहण” का तात्पर्य वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से गोद लिये गये (दत्तक) बच्चे को उसके जन्म-देने वाले माता-पिता से स्थायी रूप से अलग कर दिया जाता है एवं वह अपने (दत्तक) माता-पिता का सभी अधिकारों, विशेषाधिकारों एवं उत्तरदायित्वों सहित बच्चा वैध बन जाता है तथा उसके साथ ही उसे इस सम्बंध से जुड़े सभी अधिकार, विशेषाधिकार एवं उत्तरदायित्व भी प्राप्त होते हैं।

### अधिनियम की धारा 40:

#### पुनर्वास एवं सामाजिक एकीकरण की प्रक्रिया

किसी बच्चे की पुनर्वास एवं सामाजिक एकीकरण की प्रक्रिया बच्चे के बाल आवास या विशेष आवास में रखने के दौरान आरंभ होगी और पुनर्वास एवं सामाजिक एकीकरण की प्रक्रिया वैकल्पिक रूप से (1) दत्तक ग्रहण (2) पोषक देखभाल, (3) प्रायोजकता, एवं (4) बच्चे को परवर्ती-देखभाल वाली संस्था में भेजना आदि कार्यान्वित होती है।

### आदर्श नियम 33 (1) एवं (2)

- (1) दत्तक ग्रहण का प्राथमिक उद्देश्य किसी ऐसे बच्चे को एक स्थायी स्थानापत्र परिवार उपलब्ध कराना है, जिसकी देखभाल उसके जन्म-देने वाले माता-पिता नहीं कर सकते हैं।
- (2) दत्तक ग्रहण के संबंध में सभी विषयों के लिए ‘कारा’ द्वारा जारी किये गये केन्द्र सरकार द्वारा अधिनियम की धारा 41 की उप-धारा (3) के अन्तर्गत अधिसूचित दिशानिर्देश लागू होंगे।

### अधिनियम की धारा 41

- 1) बच्चों की देखभाल एवं उनको सुरक्षा प्रदान करना परिवार की प्रमुख जिम्मेदारी होगी।
- 2) निर्धारित क्रियाविधि के द्वारा अनाथ, लावारिस और परित्याग किये गये बच्चों के पुनर्वास के लिए दत्तक ग्रहण का सहारा लिया जायेगा।
- 3) समय-समय पर राज्य सरकार या केन्द्रीय दत्तक ग्रहण संसाधन एजेंसी (प्राधिकरण) द्वारा जारी एवं केन्द्र सरकार के द्वारा अधिसूचित दत्तक ग्रहण के विभिन्न निर्देशों के प्रावधान के अनुसार, बच्चों की दत्तक ग्रहण करने के लिये की गयी आवश्यक जाँच से संतुष्ट होने के बाद न्यायालय के द्वारा दत्तक प्रदान किया जाता है।
- 4) राज्य सरकार अपने एक या अधिक संस्थाओं या स्वैच्छिक संगठनों को हर जिले में इस



विधि से अनाथ, लावारिस और परित्याग किये बच्चों के स्थापन के लिये निर्धारित-उप धारा (3) में अधिसूचित दिशानिर्देशों के अनुसार विशेषीकृत दत्तक ग्रहण एजेंसियों के रूप में मान्यता देगा।

बशर्ते कि बाल अवासों और राज्य सरकार या देखभाल तथा सुरक्षा की आवश्यकता वाले अनाथ, लावारिस और परित्याग किये गये बच्चों के लिये किसी स्वैच्छिक संगठन द्वारा, यह सुनिश्चित किया जायेगा कि ये बच्चे बाल कल्याण समिति (CWC) के द्वारा दत्तक ग्रहण के लिये स्वतंत्र माने जाते हैं एवं ऐसे सभी मामलों को उप-धारा (3) में अधिसूचित दिशानिर्देशों के अनुरूप ऐसे बच्चों के दत्तक ग्रहण स्थापित करने के लिये उसे जिले से दत्तक ग्रहण एजेंसी को सौंप दिया जायेगा।

- 5) दत्तक ग्रहण के लिए कोई भी बच्चा प्रस्तुत नहीं किया जायेगा।
  - (a) जब तक लावारिस बच्चे की स्थिति में समिति के दो सदस्य बच्चे को स्थापन के लिये वैधानिक रूप से स्वतंत्र घोषित नहीं कर देते हैं।
  - (b) जब तक परित्याग किये बच्चे की स्थिति में माता-पिता द्वारा पुनर्विचार करने की दो महीने की अवधि समाप्त नहीं हो गयी हो, एवं
  - (c) ऐसे बच्चे की स्थिति में उसकी सहमति के बिना जो समझ सकता है एवं अपनी स्वीकृति व्यक्त कर सकता है।
- (6) न्यायालय किसी बच्चे को दत्तक ग्रहण की अनुमति प्रदान कर सकती है।
  - (a) किसी व्यक्ति को उसकी वैवाहिक स्थिति का ध्यान किये बिना, या
  - (b) किसी माता-पिता को उसके जीवित पुत्रों या पुत्रियों की संख्या का ध्यान किये बिना समान लिंग के किसी बच्चे को दत्तक देना
  - (c) निःसंतान दंपतियों को।

#### दत्तकग्रहण की प्रक्रिया

'कारा' के दिशानिर्देशों के अन्तर्गत दत्तक ग्रहण की प्रक्रिया निम्नांकित है:

#### देश के भीतर दत्तक ग्रहण

1. सबसे पहले, आशान्वित दत्तक माता-पिता को विशेष दत्तक ग्रहण एजेंसी (SAA) के यहाँ पंजीकरण करानी चाहिये। दत्तक ग्रहण में दंपति के रूचि, और इस स्तर पर दत्तक ग्रहण करने का निर्णय का पता लगाया जाता है।
2. एजेंसी के सामाजिक कार्यकर्ता के द्वारा आशान्वित दत्तकगाही माता-पिता का एक घरेलू अध्यायन तैयार किया जाता है। आशान्वित दत्तक माता-पिता के भय एवं शंकाओं को



# CARA

कम करने के लिये, घरेलू अध्ययन की प्रक्रिया के दौरान सामाजिक कार्यकर्ता के द्वारा पूर्व दत्तक ग्रहण सलाह-मशवरे का सत्र आयोजित किया जाता है। सफल दत्तक ग्रहण में किसी माता-पिता के अपने से नहीं उत्पन्न बच्चों के माता-पिता बनने की क्षमता एक निर्णायक महत्व रखती है। इसलिए किसी असंबंधित बच्चे के देखभाल करने की दंपति की उपयुक्तता इस घरेलू अध्ययन के द्वारा सुनिश्चित की जाती है।

3. बाद में, आशान्वित दत्तक माता-पिता एजेंसी को अपनी आर्थिक एवं स्वास्थ्य संबंधी स्थिति से संबंधित दस्तावेज प्रस्तुत करते हैं।
4. तब बच्चे को भावी माता-पिता को दिखाया जाता है। एजेंसी माता-पिता के द्वारा इच्छा व्यक्त करने पर बच्चे का विवरण से मिलान किया जाता है।
5. एक बार सफल मिलान पूरा कर लेने पर, एजेंसी न्यायालय से एच.ए.एम.ए. (HAMA) य किसी अन्य उपयुक्त अधिनियम के अन्तर्गत आवश्यक आदेश प्राप्त करने के लिये एक याचिका दायर कर सकता है। न्यायालय के आदेश के विचाराधीन रहने पर बच्चे को पूर्व दत्तक ग्रहण पोषक देखभाल में रखा जा सकता है।
6. बच्चे की देखभाल करने एवं कानूनी प्रक्रिया पर होने वाले खर्च के लिये मान्य एजेंसी के द्वारा निर्धारित शुल्क लगायी जाती है।
7. जब तक बच्चा अपने आपको नये परिवेश के अनुकूल नहीं बना लेता है तब तक सामाजिक कार्यकर्ता नियमित रूप से अनुवर्ती भ्रमण एवं उत्तर दत्तक ग्रहण सलाह का काम करता है।

## अंतर्देशीय दत्तकग्रहण

अंतर्देशीय दत्तकग्रहण प्रेषक एवं ग्राहक दोनों देशों की अधिकृत एजेंसियों/प्राधिकरणों को शामिल करने पर संभव है। किसी भी विदेशी/पी.आई.ओ./एन.आर.आई./ओ.सी.आई. अभिभावक (कों) द्वारा सीधा दत्तकग्रहण नहीं किया जा सकता। कृपया विस्तृत विवरण के लिये [www.adoptionindia.nic.in](http://www.adoptionindia.nic.in) पर उपलब्ध CARA के दिशानिर्देशों को देखें।

## दर्ज किये जाने वाले दस्तावेज

कृपया CARA के दिशानिर्देश देखें [www.adoptionindia.nic.in](http://www.adoptionindia.nic.in)

## बच्चों एवं आशान्वित दत्तकग्राही माता-पिता के लिए मापदंड

कृपया CARA के दिशानिर्देश देखें [www.adoptionindia.nic.in](http://www.adoptionindia.nic.in)

## आवेदनपत्रों का क्रियान्विकरण

घरेलू दत्तक ग्रहण की स्थिति में मान्यता प्राप्त भारतीय प्लेस्मेंट एजेंसी सहित विशेषीकृत दत्तक ग्रहण एजेंसियों, भारत में रहने वाले भारतीय माता-पिताओं के मामलों को संसाधित कर सकता है।

